ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
योगिराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 39 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 अगस्त, 2013 से रविवार 25 अगस्त, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

हैदराबाद बलिदान दिवस पर विशेष

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में वीर सावरकर का सहयोग

आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास में "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बनाम निजाम हैदराबाद राज्य पर शानदार विजय" बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। 20वीं शताब्दी के मध्य सन् 1939 के मध्य हैदराबाद में निजाम द्वारा किए गए अत्याचारों से यहां की बहुसंख्यक हिन्दू (आर्य) प्रजा आर्तनाद कर रही थी। निजाम ने अपने अधिकार क्षेत्र के राज्य के हिन्दुओं के सभी धार्मिक क्रिया कलापों तथा अधिकारों पर रोग लगा दी थी। हिन्दू अपने घरों मे यज्ञ कुण्ड नहीं बना सकते थे तथा हनुमान आदि अन्य मन्दिरों में भगवा झंडा नहीं फहरा सकते थे। कतिपय धार्मिक संस्कारों के लिए निजामी आज्ञा पहले से ही प्राप्त करनी पड़ती थी जो कि बहुत कष्टप्रद थी। कितने आश्चर्य की बात है कि निजामी राज्य में हिन्दू न तो यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहन सकते थे और न यज्ञ हवन कर सकते थे। मन्दिर में घंटे–घड़ियाल बजाना, कीर्तन, जागरण करना, रामायण, गीता, महाभारत की कथा कहना सभी को निजाम ने गैर कानूनी घोषित कर दिया था। हिन्दुओं तथा उनके बच्चों तथा स्त्रियों पर मुस्लिम गुण्डे मनमाने अत्याचार करते थे। हिन्दू स्त्रियों का अपहरण साधारण सी बात थी। अति संक्षेप में कहें तो निजाम राज्य ने बिल्कुल औरंगजेबी राज्य का रूप धारण कर लिया था। निजाम अपने राज्य को 'दारुल–इस्लाम' बनाने की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा था तथा शेष भारत उसे 'दारुल–हरब' लग रहा था। और यह इस्लाम का दर्शन भी कि 'दारुल–हरब' (गैर मुस्लिम राज्य) को सभी प्रकार से 'दारुल–इस्लाम' शुद्ध इस्लामी मजहबी राज्य बनाना तथा सहयोग करना प्रत्येक मजहबी (साप्रदायिक) मुसलमान का कर्त्तव्य है। इसके लिए जिहादी और गाजी बनाना मानों पुण्य का कार्य माना जाता है।

हैदराबाद सत्याग्रह मे शहीद हुतात्मा वैद्यनाथ जी, ठाकुर मलखांन सिंह, शहीद बदन सिंह, शहीद स्वामी कल्याणानन्द, शहीद महादेव, शहीद शान्ति प्रकाश, एवं शहीद चौ0 मातुराम जी।

ऐसी विकट स्थिति का सामना करने तथा वहां के नागरिकों को मौलिक अधिकार दिलाने के लिए यद्यपि हैदराबाद स्थित कांग्रेस ने कुछ प्रयास किया किन्तु मुस्लिम तुष्टिकरण की गांधीवादी नीति के कारण कांग्रेस ने अपने कदम पीछे लौटा लिए।

अन्ततः शोलापुर में आर्यसमाज ने निजाम के अत्याचारों का प्रतिकार करने के लिए एक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। इस आर्य सम्मेलन के अध्यक्ष थे श्री बापूजी अणे और संयोजक स्वामी महात्मा नारायण स्वामी जी सरस्वती। इसके पूर्व छत्रपति शिवाजी की आत्मा के रूप में वीर सावरकर का धर्मनिष्ठ हिन्दू हृदय निजाम के अत्याचारों से चीत्कार उठा था। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए वीर सावरकर तुरन्त शोलापुर पहुंचे और उन्होंने सम्मेलन में सिंह गर्जना करते हुए घोषणा की "आर्यसमाज हैदराबाद आन्दोलन में अपने आपको अकेला न समझे। हिन्दू महासभा अपनी सम्पूर्ण शक्ति आर्यसमाज के साथ लगाकर निजाम की हिन्दू विरोध निति व

– शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी के सहयोग से

हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति व्याख्यान

बुधवार 28 अगस्त, 2013 : दोपहर 12 बजे
स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी, सी-3 ब्लाक, नई दिल्ली

समस्त आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।
कृपया कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक : रमेश चन्द्र आर्य, प्रधान, आर्यसमाज पंखा रोड, जनकपुरी

दिल्ली देहात के औचन्दी ग्राम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय, औचन्दी

निर्माण के दो चरण पूर्ण होने पर

उद्घाटन समारोह | ग्रामीण क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन | तृतीय चरण की आधारशिला

रविवार 15 सितम्बर, 2013 प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक

यज्ञ : प्रातः 10 बजे ★ उद्घाटन : प्रातः 11 बजे ★आर्य सम्मेलन प्रातः 11:30 बजे

★ इस अवसर पर चिकित्सालय निर्माण में विशेष सहयोग देने वाले महानुभावों का सम्मान किया जाएगा ★

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें

संयोजक : मा. गंगाराम (प्रधान), महेन्द्र सिंह आर्य (मन्त्री) एवं आर्यसमाज औचन्दी के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण

वेद-स्वाध्याय

पापी नीच गति को प्राप्त होते हैं

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे। इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना।। ऋ.10/44/7

अर्थ—(एव-एव) इसी प्रकार (अपरे दूढ्यः) अन्य दुर्बुद्धि, पापीजन (अपाग्सन्तु) नीच गति को प्राप्त होवें (येषाम्) जिनके (अश्वाः) इन्द्रिय-रूप घोड़े (दुर्युजः) कुमार्ग में जाने वाले अश्वों के सदृश (आ युयुज्रे) इधर-उधर के विषयों में लगे रहते हैं (यत्र) जिसमें (पुरूणि) बहुत (वयुनानि) ज्ञान और (भोजन) बहुत से ऐश्वर्य हैं, उस (उपरे) परब्रह्म में, जो (प्राक् दावने सन्ति) दान देने और उपासना करने में पहले से ही अग्रिम स्थान में हैं, वे (इत्था) इस ज्ञानैश्वर्य वाले प्रभु को प्राप्त होते हैं।

इससे पहले मन्त्र की व्याख्या आगे अथर्ववेद प्रकरण में की जायेगी। वहाँ कहा गया है कि जो देवहूति अर्थात् दिव्य गुणों वाले लोग हैं वे (पृथक् प्रायन्) सामान्य लोगों से अलग ही चलते हैं और यज्ञिय नाव में बैठकर भवसागर को पार कर लेते हैं। जो **केपयः** अर्थात् दुर्बुद्धि लोग हैं वे संसार सागर के इसी किनारे पर बैठे रहते हैं।

वे दुर्बुद्धि कौन हैं, यह इस मन्त्र में बतलाते हुये कहा है—**एव-एव अपागपरे सन्तु** वे अधम जन नीच गति को प्राप्त होवें **येषाम् अश्वा दुर्युज आयुयुज्रे** जिनकी इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं और जिन्हें वश में रखना कठिन है।

पतति येन सः पापः जिस से पतन हो उसे पाप कहते हैं। मनु जी कहते हैं—

इन्द्रियाणां प्रसंगेन धर्मस्यासेवनेन च। पापान् संयान्ति संसारानविद्वांसो नराधमाः॥ मनु० १२.५२॥

जो इन्द्रियों के वश होकर विषयी, धर्म को छोड़ कर अधर्म करनेवाले अविद्वान् हैं वे मनुष्यों में नीच जन्म, बुरे-बुरे दुःख रूप जन्म को पाते हैं।

यथा यथा निषेवन्ते विषया न्विषयात्मकाः। तथा-तथा कुशलता तेषां तेषूपजायते॥ मनु० १२.७३॥

विषयी स्वभाव के मनुष्य जैसे-जैसे विषयों का सेवन करते हैं वैसे-वैसे उन विषयों में उनकी आसक्ति अधिक बढ़ती जाती है।

तेऽभ्यासात् कर्मणां तेषां पापाना मल्पबुद्धयः। सम्प्राप्नुवन्ति दुःखानि तासु तास्विह योनिषु॥ मनु० १२.७४॥

वे मन्दबुद्धि मनुष्य उन विषयों से उत्पन्न वासनाओं के वशीभूत हो उन पाप कर्मों को बार-बार करते हैं और उनके वैसे ही संस्कार बनने से उनके कारण उन योनियों को प्राप्त करके इसी संसार में दुःखों को भोगते हैं।

मनुष्य जिस भावना से जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही शरीर प्राप्त होता है और उस शरीर से वह किये हुये कर्मों का फल भोगता है। उसे जैसा शरीर प्राप्त होता है उसमें उन कर्म फलों को भोगकर फिर पाप-पुण्य समान होने पर साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है और उसके किये कर्मों के आधार पर फिर वैसा ही जन्म प्राप्त होता है। इसी प्रकार यह वृत्तिकर्म संस्कार का चक्र तब तक चलता रहता है जब तक विवेक ज्ञान न हो जाये।

इनके विपरीत जो **इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने** लोग दान देने अर्थात् यज्ञादि उत्तम करके यज्ञिय नाव में बैठने का स्थान आरक्षित करा लेते हैं वे **पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना** जिस परमेश्वर में ज्ञान और ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं, उस परमात्मा को प्राप्त होते हैं। यज्ञिय नाव में स्थान किन को मिलता है इस विषय में मनु जी फिर कह रहे हैं—

वेदाभ्यासस्तपोज्ञान मिन्द्रियाणां च संयमः। धर्मक्रियात्मचिन्ता च निःश्रेयस्करं परम्॥ मनु० १२.८३॥

वेदों का स्वाध्याय, तप, ज्ञान, इन्द्रियों का संयम, धर्माचरण और आत्मा-परमात्मा का चिन्तन ये छः मोक्ष को प्राप्त कराने वाले सर्वोत्तम कर्म हैं, इनमें भी आत्मा-परमात्मा का ज्ञान सबसे श्रेष्ठ है। जो संन्यास आश्रम वाले हैं, वे अन्य कर्मों को त्याग आत्मज्ञान, इन्द्रिय-संयम और वेद-स्वाध्याय में तत्पर रहें।

१. वेद का स्वाध्याय—वेद परमात्मा की वाणी है जिसमें चारों वर्ण, आश्रम और पुरुषार्थ चतुष्टय का विशद वर्णन किया है। वेद का विषय कहीं पर मुख्य और कहीं गौण रूप से परमात्मा ही है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिये उसकी वाणी वेद में बतलाई विधि के अनुसार ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना, उपासना की जाये तो अधिक लाभ होगा।

२. तपः—ईश्वर भक्ति, धर्म, परोपकार के कार्यों में लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, मान-अपमान सभी को सहन करते हुये कार्यों को श्रद्धा भाव से सतत करते रहना। परन्तु ध्यान रहे शरीर को अनावश्यक कष्ट देना तप नहीं है।

३. ज्ञान—प्रकृति-पुरुष का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर इससे पृथक् होना ही मोक्ष है। विवेक-ज्ञान, विद्या का समान अभिप्राय है। तत्त्व के अभ्यास और जो अनात्म पदार्थ हैं, उनका त्याग करने से विवेक-ज्ञान की प्राप्ति होती है और **ज्ञानान्मुक्तिः** ज्ञान से ही मोक्ष प्राप्त होता है इसलिये ज्ञान से बढ़कर और कोई दूसरा कार्य नहीं है। योग का अभ्यास करने से विवेकख्याति की प्राप्ति हो ज्ञान का प्रकाश होता है।

४. इन्द्रिय संयम—इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर उन्हें मन में लीन करना, मन को बुद्धि में और बुद्धि को आत्मा में तथा आत्मा को शान्तस्वरूप परमात्मा में लगाने से ही इन्द्रियों पर संयम सिद्ध होगा।

५. धर्म का आचरण—जिससे इस लोक और परलोक दोनों की सिद्धि हो उसे धर्म कहते हैं मनुस्मृति में कहे धृति, क्षमा-आदि दस लक्षणों वाले धर्म का पालन करने वाले की धर्म रक्षा करता है।

६. आत्मचिन्तन—मैं कौन हूँ, मैं संसार में किसलिये आया हूँ, मेरा कौन मित्र है और मैं किसका मित्र हूँ, क्या मैं जो कार्य कर रहा हूँ, वे मुझे मोक्ष की ओर ले जाने वाले हैं अथवा संसार के बन्धन में बांधने वाले, इस प्रकार का चिन्तन कर ईश्वर की भक्ति करने से मोक्ष की प्राप्ति होना सम्भव है। - *क्रमशः*

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे –

399 स्त्री आर्यसमाज भोजपुर बिजनौर 500

आर्यसमाज अशोक नगर द्वारा एकत्र राशि

400	आर्यसमाज अशोक नगर	11000
401	सर्वश्री दीनानाथ गुलाटी	1000
402	प्रकाशचन्द्र आर्य	500
403	चतुर्भुज अरोड़ा	500
404	भगवानदास मनचन्दा	500
405	शिव मिनोचा	500
406	राधेश्याम मदान	500
407	मिठनलाल आर्य	250
408	चन्द्रभान आहूजा	250
409	पवन गांधी	250
410	चन्द्रपाल आहूजा	250
411	ओम प्रकाश मेंहन्दीरत्ता	200
412	के.के. धींगरा	200
413	मंगतराम गम्भीर	100
414	वीरेन्द्र हसीजा	100
415	रामचन्द्र धींगरा	100
416	भीमसेन	100

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर (राजस्थान) द्वारा एकत्र राशि

417	रामेश्वर लाल आर्य	500
418	उदयशंकर व्यास	500
419	नरसिंह सोनी	100
420	मधुर गोस्वामी	100
421	रेवत राम चौधरी	100
422	सावित्री देवी सोनी	100
423	सरस्वती देवी सोनी	100
424	महेश चन्द्र सोनी	500
425	शम्भूराम यादव	200
426	डॉ. रतिराम आर्य	100
427	रामकिशन आर्य	50
428	रूपा देवी सोनी	100
429	कंचन देवी सोनी	100
430	धर्मवीर असेरी	100
431	उषा देवी सोनी	100
432	पुष्पा देवी सोनी	100
433	आर्यसमाज म.द. मार्ग बीकानेर	2150

आर्यसमाज सूरजमल विहार द्वारा एकत्र राशि

434	श्रीमती सुमेधा ठाकुर	5100
435	नरेन्द्र गम्भीर	5000
436	ओम प्रकाश शर्मा	5100
437	लालचन्द मल्होत्रा	5000
438	सुभाष ढींगरा	3100
439	शशि देव शर्मा	3100
440	श्रीमती उर्वी वधवा	2500
441	श्रीमती कृष्णा वधवा	2500
442	भीम सेन खुराना	2200
443	श्रीमती वन्दना पोपली	2500
444	श्रीमती गुरमीत	2100
445	संजय चुग	2100
446	हरिकान्त त्यागी	1100
447	धर्मपाल सिंह	1100
448	वी. पी. चुघ	1100
449	श्रीमती प्रतिभा जुनेजा	1100
450	श्रीमती कमलेश महाजन	1100
451	श्रीमती सुधा शर्मा	1100
452	के. के. सेखरी	1100
453	श्रीमती सुधा शर्मा	1100
454	श्रीमती रीता	1100
455	श्रीमती स्मृति	1100
456	विजय हिन्द कपूर	1000
457	डी. के. महाजन	1000
458	श्रीमती सुभद्रा राजपाल	1000
459	भूषण कुमार मेंदीरत्ता	751
460	श्रीमती मिथलेश कुमारी	500
461	श्रीमती शारदा गुप्ता	500
462	श्रीमती संसार सिंह	900
463	डी.सी. आत्रे	500
464	सक्सेना परिवार	500
465	वी.पी.एस. राठी	500
466	वर्मा जी (डी19, सूरजमल विहार)	500
467	एच. के. गुप्ता	500
468	आशानन्द सेठ	500
469	रूपचन्द कालरा	501
470	के. एस. गुप्ता	500
471	कैलाश कपूर	500
472	एच.बी.एस. राणा	500
473	ओ. पी. विकसित	500
474	श्रीमती कामिनी तोमर	500
475	श्रीमती प्रभा मलिक	500
476	कु. स्वाती जैन	500
477	श्रीमती राजकुमारी	500
478	श्रीमती सुमन क्वात्रा	500
479	श्रीमती भव्या	500
480	श्रीमती मोनिका दुग्गल	500
481	श्रीमती उर्मिला	500
482	श्रीमती अनुराधा	500
483	श्रीमती सषमा जैन	1000
484	श्रीमती रितु शर्मा	500

– *क्रमशः*

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

स्वाध्याय का पर्व है श्रावणी

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

वर्षा काल यदि मनुष्य के मन में हर्ष और उल्लास का संचार करता है तो अति वृष्टि कभी–कभी हमारी सामान्य गतिविधियों में बाधा भी उत्पन्न कर देती है। प्राचीन काल में नदियों में जब उफान आ जाते, जल प्लावन के कारण मार्ग अवरूद्ध हो जाते है निरन्तर भ्रमण करने और जन–जन तक अपने आध्यात्मिक उपदेश पहुंचाने वाले साधु संन्यासी और धार्मिक जन वर्षा के चार महीने एक ही स्थान पर व्यतीत करते, इसे चातुर्मास्य कहा जाता था। वैदिक संन्यासी और जैन धर्म के साधु साध्वी आज भी चौमासा की निश्चित दिनचर्या का पालन करते हैं। इस चातुर्मास्य का आरम्भ श्रावणमास की पूर्णिमा से होता था। इसे ही श्रावणी उपकर्म का पर्व कहा जाता था। बहिनों द्वारा भाइयों की कलाइयों पर राखी बांधने का लौकिक विधान कालान्तर में प्रचलित हुआ जब कि मौलिक श्रावणी शास्त्रों के अध्ययन, मनन तथा उनपर आधारित प्रवचन उपदेश करने का ही पर्व है।

आज भी दाक्षिणाय ब्राह्मण (मुख्यतः महाराष्ट्र तथा गुजरात के) श्रावणी पूर्णिमा के दिन निकटवर्ती जलाशय या नदी तट पर एकत्रित होते हैं। वहां स्नान कर यज्ञोपवीत बदलते हैं। इस अवसर पर जो मंत्र बोला जाता है उसका अभिप्राय है यह यज्ञोपवीत अत्यन्त पवित्र है। इसकी उत्पत्ति प्रजापति के साथ हुई है। यह तीन घरों का समन्वित यज्ञोपवीत हमें दीर्घायु, बल तेज प्रदान करे तथा ओजस्वी बनाये। यज्ञोपवीत के तीन धागे वस्तुतः पितृऋण (माता–पिता), आचार्य (विद्या प्रदाता गुरु) ऋण तथा ऋषि ऋण से उऋण होने के संकल्प के प्रतीत हैं। माता–पिता और आचार्य का जो ऋण हम पर है उसे तो प्रत्यक्ष हम अनुभव करते ही हैं किन्तु पुराकालीन ऋषियों ने अपनी दीर्घ कालीन अध्ययन, तप और चिन्तन के द्वारा जो विशाल शास्त्र सम्पत्ति हमारे लिए धरोहर के रूप में छोड़ी है उसे संभालना, साथ ही उसमें वृद्धि करना भी हमारा पवित्र दायित्व है।

ऋषि ऋण से उऋण होने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है स्वाध्याय। इस शब्द के दो अर्थ किये जाते हैं। प्रथम है स्व का अध्ययन। इसे अंग्रेजी में Introspection कहें या आत्म निरीक्षण। स्वाध्याय का अन्य अर्थ है जीवन को उन्नत बनाने वाले, पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) की प्राप्ति में सहायक वेद, उपनिषद, दर्शन, मानव धर्म शास्त्र वाल्मीकीय रामायण, व्यास रचित महाभारत, कृष्ण की वाणी से निकली भगवत् गीता तथा विदुर जैसे नीतिज्ञ से कही गई विदुर नीति। ये तथा इस श्रेणी के अन्य अनेक ग्रन्थ हैं जो हमारे नियमित नैत्यिक स्वाध्याय के क्रम में आते हैं।

महर्षि पंतजलि ने जब राजयोग का प्रणयन किया तो उन्होंने समाधि सिद्धि के लिए अष्टांग योग का विधान किया। बौद्ध धर्म इसे ही अष्टांगिक में (आठ प्रकार के मार्ग) कहा गया है। आठ योगांगों का सिलसिला यम–नियमों से आरम्भ होता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पांच यम हैं। जबकि शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान को पांच नियम कहा गया है। इस प्रकार स्वाध्याय योग के सर्वोच्च सोपान पर चढ़ने की एक प्रमुख सीढ़ी है। पातञ्जल योगदर्शन पर भाष्य लिखने वाले महर्षि व्यास ने योग की महिमा बताते हुए लिखा कि स्वाध्याय और योग के द्वारा साधक के हृदय में परमात्मा की सत्ता का प्रकाश हो जाता है। स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते।

तैत्तिरीयोपनिषद में स्वाध्याय और प्रवचन का महत्त्व विस्तार से बताया गया है। आचार्य सानिन्ध्य में पर्याप्त समय तक अध्ययन कर जब शिष्य उनसे विदा लेता है तो आचार्य अपने प्रिय शिष्य को जो दीक्षान्त उपदेश देते हैं उनके आरम्भिक वाक्य हैं–

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम। सत्य बोलने तथा धर्म का आचरण करने के साथ साथ निरन्तर स्वाध्याय (शास्त्राध्ययन) में प्रवृत्त रहना आवश्यक बताया गया है। स्वाध्याय का पूरक कर्म है प्रवचन। जो कुछ स्वाध्याय द्वारा उपार्जित किया उसे सूम की नांई स्वयं तक न रख कर हम उसे अपने प्रवचनों के द्वारा अन्यों तक पहुँचायें, यह भी आवश्यक माना गया है।

तब प्रश्न होता है कि स्वाध्याय के लिए किन ग्रन्थों को प्राथमिकता दी जाये? मुख्य रूप से तो वेदों का अध्ययन ही स्वाध्याय कहलाता है। गौण रूप से अन्य ऋषि कृत ग्रन्थों को भी स्वाध्याय के समयचक्र (Time Table) में समाहित किया जा सकता है। विद्वानों की मान्यता ही नहीं अपितु यह इतिहास सिद्ध निष्कर्ष है कि वेद मानव के सर्वाधिक प्राचीन धर्म तथा नीति के विधायवय ग्रन्थ हैं।

भारतीय परम्परा में मानव धर्म शास्त्र के प्रणेता आचार्य मनु ने वेदों को अखिल धर्म का मूल बताया तथा घोषित किया कि वेद ही वह ग्रन्थ है जो पितरों (पूर्वजों), वेद संज्ञक विद्वानों तथा साधारण मनुष्यों को ज्ञान प्रदान करने वाले नेत्र तुल्य हैं।

ये स्वतः प्रमाण हैं– अपनी प्रामाणिकता के लिए किसी अन्य शास्त्र पर निर्भर नहीं है। मनु ने तीनों लोकों, चारों आश्रमों तथा चतुर्वण मानव समाज के लिए वेदों को मार्गदर्शक बताया। उनका यह भी कथन है कि वेदों को सभी भौतिक तथा आध्यात्मिक विधाओं का आदि स्रोत कहा जाये तो अनुचित नहीं है। कारण कि वेदशास्त्र का ज्ञाता ही सेनापतित्व राज्य संचालन यहां तक कि लोकलोकान्तरों का समुचित नियंत्रण और दण्डनीति का संचालन ठीक प्रकार से कर सकता है। वेदों के महत्त्व और उनकी उपादेयता को पौरस्त्य मनीषियों की भांति पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है। प्रसिद्ध भारत विद्याविद् मैक्समूलर ने तो एक श्लोक के माध्यम से कहा–**"जब तक धरती पर ऊंचे शिखरों वाले पर्वत और स्वच्छ जल को प्रवाहित करने वाली नदियां रहेंगी तब तक ऋग्वेद की महिमा सर्वत्र प्रचलित रहेगी।"** अतः स्वाध्याय के लिए सर्वाधिक उपयोगी ग्रन्थ तो वेद ही हैं। जब हम ऋषियों के ऋण से उऋण होने की बात करते हैं तो भारत में उत्पन्न होने वाले पुराकालीन ऋषियों की एक लम्बी परम्परा हमारे समक्ष आ जाती है। ऋषि परम्परा में कपिल हैं जिन्होंने प्रकृति और पुरुष के रूप में अचेतन जड़ तत्त्व तथा चेतन पुरुष (परमात्मा एवं जीवात्मा) का अभिज्ञान कराया। उनके द्वारा उपदिष्ट सांख्य दर्शन का महत्त्व निर्विवाद है। ऋषियों के क्रम में योग के उपदेष्टा पतञ्जलि पर्याप्त अर्वाचीन है। ने शुग वंशीय ब्राह्मण सम्राट के राज पुरोहित थे तथा उन्होंने राजा से अश्वमेघ यज्ञ करवाया था। महर्षि कणाद ने जिस वैशेषिक दर्शन की रचना की वह आज के परमाणु विज्ञान के काफी निकट है तथा वैज्ञानिक दर्शन कहलाता है। महर्षि गौतम (अक्षपाद) ने न्यायदर्शन का प्रवर्त्तन किया तथा भारतीय तर्कशास्त्र (Logic) की नींव डाली। महर्षि बादरायण (व्यास) ने विश्वविख्यात वेदान्तदर्शन की रचना की और विश्व ब्रह्माण्ड के नियामक ब्रह्म का दर्शनिक विवेचन किया। उन्हीं के शिष्य महर्षि जैमिनि ने मीमांसा शास्त्र की रचना की तथा वेदोक्त कर्मकाण्ड का व्यवस्थापन किया। ये ही छः वैदिक दर्शन (Six Systems of Indian Philosophy) है।

ऋषि परम्परा में महर्षि वाल्मीकि का शीर्ष स्थान है, जिन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चरित स्वरचित रामायण महाकाव्य में प्रस्तुत किया। ऋषि श्रेणी में व्यास भी हैं जिन्होंने महाभारत की रचना की और चतुर्विध पुरुषार्थ के साधक इस ग्रन्थ के प्रणेता बने। इस श्रेणी में मनु, याज्ञवल्क्य, पाराशर आदि भी आते हैं जिन्होंने स्मृति ग्रन्थों की रचना की तथा मनुष्य के वैयक्तित्व, पारिवारिक तथा समष्टिगत उत्थान का विधान प्रस्तुत किया। अन्ततः श्रावणी के दिन से आरम्भ किया यह स्वाध्याय सत्र मार्गशीर्ष मास तक चलता है और इस अवधि में गुरु शिष्यों का पठन–पाठन तथा अध्ययन –अध्यापन इस श्लोक के साथ समाप्त होता है।

सहना ववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवाव है। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।

हमारा अध्ययन तेजस्वी हो तथा हम द्वेष भाव न रखें।

– नन्दनवन, जोधपुर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री कृष्ण जन्माष्टमी (28 अगस्त) पर विशेष

योगीराज श्री कृष्ण व आर्य समाज

– डॉ० महेश विद्यालंकार

हमारे देश का सौभाग्य रहा है कि यहाँ श्री कृष्ण जैसे धर्मात्मा, पुण्यात्मा, योगीराज, तपस्वी, त्यागी, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, लोकहितकारी महापुरूषों ने जन्म लिया, जो अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से सारे संसार के प्रेरक व मार्गदर्शक बने। इतिहास में ऐसा अद्‌भुत विलक्षण और बहुआयामी व्यक्तित्व दुर्लभ है– जैसा योगीराज श्रीकृष्ण का है। हजारों वर्षों के घात–प्रतिघातों, वात्याचक्रों व विवादों को झेलते हुए वे आज भी पूजित व अलौकिक महापुरूषों के पद पर प्रतिष्ठित हैं। उनका जन्मदिन भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी आदर, श्रद्धा व समारोह पूर्वक मनाया जाता है। उनके समकालीन तथा बाद में अनेक महापुरूष हुए, किन्तु जितनी धूमधाम, व श्रद्धाभाव से, पूज्यभाव और व्यापक स्तर पर श्री कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाता है, उतना अन्य किसी का नहीं। इसके पीछे महत्त्वपूर्ण तथ्य है। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था – ***परित्राणाय साधूनाम्***– सज्जनों की रक्षा करना, **विनाशाय दुष्कृताम्**– दुष्टों का दमन करना और **धर्म संस्थापनार्थाय**– धर्म की रक्षा व स्थापना करना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। वे खण्ड–खण्ड भारत अखण्ड देखना चाहते थे।

श्री कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर में पले। मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर भागना पड़ा। धर्मयुद्ध में नाना रूप धारण करने पड़े। अपमान और कष्टों का जहर पीना पड़ा। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियों, कठिनाइयों और संघर्षों का अजायब घर था। ऐसी अवस्था में भी कभी हताश व निराश नहीं हुए, सदैव मुस्कराते रहे। आज के साधनहीन, हताश, निराश मानव समाज को उनके प्रति यह प्रेरक पक्ष सदा संभलने के लिए और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। यदि हम उनके जीवन से सीखना चाहें तो बहुत कुछ सीख सकते हैं। दुर्भाग्य है कि हम अपने महापुरूषों के जीवन को इतना विकृत व कलंकित बना चुके हैं कि उनका सत्य स्वरूप ही

ओझल हो गया है। श्री कृष्ण को भगवत पुराण और लोकसाहित्य में चोर–जार शिरोमिणी, मक्खन चोर, लम्पट, भोगेश्वर और गलियों का मजनूं सिद्ध किया है। रही सही कसर टेलीवीजन, सीरियल, रास लीला, कृष्णलीला आदि पूरा किये दे रहे हैं। भयंकर अश्लीलता, पाखण्ड और अन्धविश्वास का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। पुराणों के उस आप्त पुरूष के चरित्र को कीचड़ में उछाला जा रहा है। पुराणों के आधार पर उन्हें भगवान मानकर मनगढ़न्त लीलाएं व बातें जोड़ दी गई हैं जिन्हें सुनकर लज्जा से सिर झुक जाता है।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण के पुराणों में वर्णित स्वरूप को तर्क–प्रमाण युक्ति के आधार पर नहीं मानता है। श्री कृष्ण के यथार्थ स्वरूप का महाभारत में पता चलता है। जहां उन्हें सर्वगुण सम्पन्न, राष्ट्रनायक, योगी, उपदेष्टा, विश्वबन्धु, नीतिनिपुण, मार्ग दर्शक आदि विशेषण दिये गए हैं। आर्य समाज सत्य का शोधक और सत्य का प्रचारक रहा है। ऋषि दयानन्द की यह भी संसार को देन रही है। महापुरूषों के स्वच्छ धवल निर्मल चरित्रों को यथार्थ स्वरूप सबके सामने रखा। ऋषिवर ने योगीराज श्रीकृष्ण के उज्ज्वल चरित्र का और उनके महान योगदान का जो प्रमाण दिया है वह हम सबके लिए पठनीय, स्मरणीय और अनुकरणीय है– ***"श्री कृष्ण का गुण कर्म स्वभाव और चरित्र महा पुरुषों के सदृश है।"*** आर्य समाज श्रीकृष्ण को महापुरूष के रूप में प्रतिष्ठित करता है। पौराणिक इन्हें ईश्वरावतार कहते हैं। इनकी मूर्तियों की पूजा करते हैं। वैदिक विचारधारा अवतार और मूर्ति पूजा नहीं मानती है। आर्य मान्यता इनके चरित्र की विशेषताओं को अपनाने का सन्देश देती है। जबकि पुराणपन्थ चित्र की बाह्य पूजा तक ही सीमित है। कैसी विचित्र विडम्बना है। जिसे हम भगवान मानते है उसी भगवान को हम नचाते हैं गवाते हैं और उसी के नाम पर भीख मांगते हैं। ऐसा करना महापुरूषों के साथ अन्याय है। जिन्होंने अपने को कभी भगवान नहीं कहा, उन्हें भगवान बनाकर भगवान् पद की गरिमा व शक्ति को मानव शरीर में सीमित कर दिया।

महापुरुषों के रूप में इनके जीवन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। किन्तु लोगों ने मांस मदिरा सेवन करने के लिए देवी का सहारा लिया। चरस भांग व धतूर पीने के लिए शिवजी का सहारा बनाया। भोग विलास व्यभिचार, दुराचार के लिए कृष्ण को आगे कर दिया गया। लोग भेड़ चाल में भागे चले जा रहे हैं। पढ़े लिखे लोग रूढ़िवादियों व अन्ध विश्वासियों की पूजा कर रहे हैं। आज दुनिया श्रीकृष्ण के विकृत चरित्र, स्वरूप तथा लीला पूर्ण बातों को मान रही है।

आर्य समाज ऐसी मिथ्या कल्पित एवं आधारहीन बातों को नहीं मानता है। वह महापुरूषों के प्रेरक उज्ज्वल जीवन चरित्रों का सत्य मूल्यांकन करता है। उनकी चारित्रिक विशेषताओं को प्रचारित तथा प्रसारित करता है। वैदिक चिन्तन क्रियात्मक व व्यावहारिक पक्ष पर बल देता है। बिना आचरण के धर्म का कोई महत्त्व नहीं हैं। श्री कृष्ण ने क्रियात्मक जीवन के माध्यम से जीवन के विविध पक्षों को लेकर प्रस्तुत किया। यदि कोई सीखना चाहे तो जीने की कला उनसे सीखे। उनके व्यक्तित्व में धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, नीति–रीति, काव्य आदि सब कुछ विद्यमान है। श्री कृष्ण ने गाएं चराईं, मुरली बजाई, जब सारथी बनना पड़ा तो सारथी बने, जब सुदर्शन चक्र उठाना पड़ा तो सुदर्शन चक्र उठाया। जो भी काम किया निपुणता से किया, यही उनका **योगः कर्मसु कौशलम्** था। सारा जीवन मुसीबतों, कष्टों, संघर्षों में रहा, किन्तु वह आत्मज्ञानी सदा मुस्कराता हुआ झेलता रहा। कभी चेहरे पर शिकन तक नहीं आने दी। कभी धैर्य नहीं छोड़ा। हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखा। यही **समत्वं योग उच्यते** हमारे लिए अमर सन्देश है।

अध्यात्म की दृष्टि से श्रीकृष्ण का स्थान बहुत ऊँचा है। गीता में प्रदत्त ज्ञान के आगे सारा संसार नतमस्तक है। उनके जीवन व्यवहार स्वभाव आचरण सोच आदि में अनेक प्रेरक घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है। हम मूल को और सत्य स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। काल्पनिक, चमत्कारिक और अतिश्योक्ति पूर्ण बातों को सत्य वचन महाराज, बाबा वाक्यं प्रमाणम् कहकर मानते आ रहे हैं। इससे महापुरुषों के जन्मदिन, पर्व, कथा, प्रवचन, रामलीलाएं, कृष्णलीलाएं आदि सभी मात्र मनोरंजन, खाने–पीने, घूमने व मौजमस्ती के साधन बनते जा रहे हैं। इनके पीछे जो सन्देश, प्रेरक प्रेरणाएं, सीखने के

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

तमस् में से रोशनी की ओर पग बढ़ते रहें,
हर वर्ष यह उपहार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

भेद भावों को भुलाकर भद्रता भरते रहें,
समझा मधुर व्यवहार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

अब गायें घर–घर में पले, गोमात की सेवा करें,
गोपाल कर तैयार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

दूध, घृत, मक्खन, दही खाएं बनें बलवान सब,
शुद्ध, शाकाहार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

नारियों में भी कभी अश्लीलता आवे नहीं,
सादगी का सार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

देश का हर नागरिक अब देश की सेवा करे,
नैया लगा भव पार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

सादगी, संयम, सदाचारी बनें सेवक सभी,
यह मनुज को प्यार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

दुष्ट, दानव का दमन कर दीनता भी दूर हो,
कर राष्ट्र का उद्धार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

धर्म से जनधान्य जोड़ें, 'धूम' सब धनवान हों,
बतला धर्म का सार, देती है कृष्णजन्माष्टमी।

– धूम सिंह शास्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में

वार्षिक खेल-कूद एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन

नाम प्रतियोगिता	दिन/दिनांक/समय	स्थान	विवरण/विषय/वर्ग	सम्पर्क
आशुभाषण प्रतियोगिता	शुक्रवार 30 अगस्त प्रात: 9 बजे	**दयानन्द मॉडल स्कूल,** विवेक विहार, दिल्ली दिल्ली-110091	वर्ग -1 (कक्षा 6 से कक्षा 8) वर्ग - 2 (कक्षा 9 से कक्षा 10) वर्ग - 3 (कक्षा 11 से 12) प्रत्येक प्रतिभागी को 3 मिनट का समय दिया जाएगा।	अध्यक्ष : बिशम्भरनाथ भाटिया (9818283777) प्रबन्धक : प्रवीन भाटिया (9810336633) श्रीमती सीमा भाटिया (9810558999)
समूहगान प्रतियोगिता	सोमवार 2 सितम्बर प्रात: 9 बजे	**महर्षि दयानन्द प. स्कूल,** आर्यसमाज न्यू मोती नगर नई दिल्ली-110015	वर्ग -1 बाल वर्ग (कक्षा 5 तक) वर्ग -2 कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 6 से 8) वर्ग - 2 वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12) विषय : महर्षि दयानन्द सरस्वती को समर्पित गीत नियम : 1. एक टीम में अधिकतक 10 विद्यार्थी ही भाग ले सकते हैं। 2. विद्युत वाद्य यंत्र का निषेध है। 3. वाद्य यंत्र प्रतियोगी स्वयं बजाएंगे।	प्रबन्धक : सुरेश टंडन (9811982493) प्रधानाचार्या : इन्दिरा छाबड़ा (9868992733)
भाषण प्रतियोगिता	मंगलवार 17 सितम्बर प्रात: 9 बजे	**आर्य वीर मॉडल स्कूल** बादली, दिल्ली-110042 **नोट :** एक विद्यालय से एक ही प्रतिभागी भाग लेगा। भाषण 3 मिनट का होगा।	वर्ग -1 बाल वर्ग (कक्षा 1 से 5 तक) विषय : आदर्श विद्यार्थी वर्ग -2 कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 6 से 8) विषय : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की राष्ट्र को देन वर्ग - 3 वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12 तक) विषय : जीवन में संस्कारों का महत्त्व	प्रबन्धक: महेन्द्रपाल मनचन्दा प्रधानाचार्या : उर्मिला मनचन्दा (011-64543030)

दिल्ली के समस्त शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों एवं विद्यालय के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने यहां से अधिकाधिक विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

चित्रकला प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इसी शृंख्ला में दयानन्दआदर्श विद्यालय तिलक नगर में दिनांक 29 जुलाई, 2013 को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 18 विद्यालयों के लगभग 200 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में दिए गए विषयों के अनुसार सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक अपनी प्रतिभा दिखाई। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री बलदेवराज आर्य जी ने सभी बच्चों का उत्साहवर्धन किया व आशीर्वाद दिया।

विद्यालय की उप प्रधानाचार्या श्रीमती माया तिवारी ने इस प्रतियोगिता में भागीदारी दिलाने के लिए बच्चों के साथ अध्यापिकाओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए गए। विजेताओं को आर्य विद्या परिषद् के वार्षिकोत्सव पर पुरस्कृत किया जाएगा।

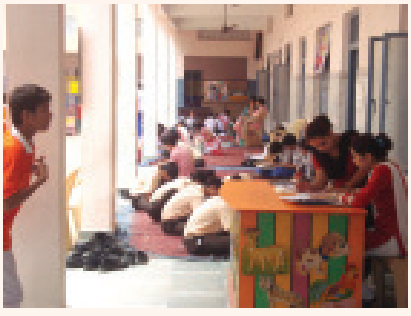

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. एन्कलेव, दिल्ली-110092 में

गो-कथा

27-28-29 सितम्बर 2013

कथा समय : प्रतिदिन प्रातः 7-9 बजे
प्रवचन : पं. धूम सिंह शास्त्री
पूर्वी दिल्ली की आर्यसमाजों से विशेष अनुरोध है कि इन तिथियों में अपना कार्यक्रम न रखें और अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

– आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर, मन्त्री, 9873364764

आर्यसमाज खलासी लाइन, सहारनपुर

श्रावणी महोत्सव

24 अगस्त से 28 अगस्त, 2013

प्रवचन : आचार्य अर्जुन देव वर्णी
भजनोपदेश : पं. सुमन आर्या
पं. आजाद सिंह लहरी

– मन्त्री

आर्यसमाज सागरपुर, दिल्ली-46

वेद कथा : 5-8 सितम्बर

यज्ञ : प्रातः 7 से 9 बजे
उपदेश : आचार्य योगेन्द्र शास्त्री
भजन : पं. कुलदीप आर्य (बिजनौर)

– जयसिंह वर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज शान्ति नगर 4 मरला सोनीपत

जन्माष्टमी एवं वार्षिकोत्सव

26 अगस्त से 28 अगस्त, 2013

यज्ञ : प्रातः 6 से 9:30 बजे
आशीष : आर्य तपस्वी श्री सुखदेव
वक्ता : आचार्या लक्ष्मी भारती
भजनोपदेश : आचार्य मोहित शास्त्री

– अमरनाथ आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क दिल्ली

गायत्री यज्ञ एवं जन्माष्टमी

24 अगस्त से 28 अगस्त 2013

गायत्री यज्ञः प्रातः 7 से 8 बजे
प्रवचन : आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय
भजनोपदेश : श्री धीरेन्द्र दत्त

– सन्दीप वेदालंकार, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

स्त्री आर्यसमाज सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-110029

प्रधान : श्रीमती सूरज कौड़ा
मन्त्री : श्रीमती अंजू लखेरा
कोषाध्यक्ष : श्रीमती नीलम गुप्ता

भा. आर्य भजनोपदेशक परिषद् गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली

प्रधान : श्री सत्यपाल मधुर
मन्त्री : डॉ. कैलाश कर्मठ
कोषाध्यक्ष : श्री नरेशदत्त आर्य

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा (राज.)

प्रधान : श्री जे. एस. दुबे
मन्त्री : श्री राकेश चड्ढा
कोषाध्यक्ष : श्री कौशल रस्तोगी

आर्यसमाज कालकाजी, नई दिल्ली

श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महायज्ञ

26 अगस्त से 1 सितम्बर, 2013

महायज्ञः प्रातः 7 से 8:15 बजे
ब्रह्मा : आचार्य अवधेश कुमार शास्त्री
प्रवचन : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजनोपदेश : श्रीमती सुदेश आर्या
विशिष्ट सम्मेलन : 1 सितम्बर
प्रातः 10 बजे से 1 बजे

– रमेश गाडी, मन्त्री

आर्यसमाज रोहिणी सै. -7 दिल्ली

श्रावणी पर्व

29 अगस्त से 1 सितम्बर 2013

प्रवचन : डॉ. शिवकुमार शास्त्री
भजनोपदेश : श्री श्यामवीर राघव

– राजीव आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली-92

वेद प्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व

25 अगस्त से 28 अगस्त 2013

चतुर्वेद शतक यज्ञः प्रातः 7 से 8:30बजे
प्रवचन : आचार्य पं. गुरुवचन शास्त्री
भजनोपदेश : श्री मधुर शास्त्री

– पतराम त्यागी, मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

वेद प्रचार समारोह

21 अगस्त से 28 अगस्त 2013

यज्ञः प्रातः 7:30 से 9:15 बजे
प्रवचन : आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
भजनोपदेश : आचार्या अमृता शास्त्री
सत्याग्रह बलिदान दिवस : 25 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : 28 अगस्त
भाषण प्रतियोगिता : प्रातः 10:30 बजे
विषयः आदर्श एवं अनुकरणीय योगिराज श्रीकृष्ण

– अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज एवं आर्ष गुरुकुल नोएडा

श्रावणी एवं यज्ञोपवीत

31 अगस्त से 1 सितम्बर, 2013

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया जाएगा।
इस अवसर पर अन्तर्गुरुकुलीय संस्कृत श्लोक, संस्कृत भाषण प्रतियोगिता, भजन प्रवचन एवं विद्वत संगोष्ठी का भी आयोजन किया जाएगा।

– कै. अशोक गुलाटी, मन्त्री

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, दिल्ली

श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार सप्ताह

2 सितम्बर से 8 सितम्बर, 2013

यजुर्वेद पाठ : 2 बजे से 3:45 बजे
भजन-प्रवचन : 3:45 से 5:20 बजे
आमन्त्रित वक्ता : आशा माता जी, आचार्य सुलभा शास्त्री, आचार्य लक्ष्मी भारती, श्रीमती शशि प्रभा आर्या, श्री सुदर्शन लाम्बा एवं श्री रमेश रावल, डॉ. शिव कुमार शास्त्री, डॉ. रचना विमल दुबे

– ओम प्रकाश अरोड़ा, मन्त्री

दिल्ली संस्कृत अकादमी
दिल्ली सरकार की ओर से

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन

23-25 अगस्त, 2013

विज्ञान भवन, नई दिल्ली
आप सब सादर आमन्त्रित हैं

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सचिव

मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली द्वारा

छात्रवृत्ति वितरण समारोह

6 अक्तूबर, 2013 प्रातः 9 बजे से
स्थान – गुरुकुल गौतम नगर, न.दि.
अध्यक्षता : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
उद्घाटन : डॉ. योगानन्द शास्त्री

– राजवीर सिंह शास्त्री, महामन्त्री

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा (राजस्थान) द्वारा

विक्लांग युवक-युवती का विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा के सत्संग हॉल में एक विक्लांग युवक-युवती का विवाह संस्कार कराया गया।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री राकेश चड्ढा ने बताया कि विक्लागं युवक जगदीश लालवानी पो. ग्रेजुएट भाव नगर गुजरात तथा युवती जयवन्ती पंजवानी (एम.ए. पी. एच.डी.) का विवाह आर्यसमाज के पुरोहित श्री बिरधीचन्द शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर जिला प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा ने नव दम्पति को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया, तथा आर्यसमाज विज्ञान नगर की ओर से वैदिक साहित्य भेंट किया गया। नव दम्पति को आशीर्वाद देते हुए श्री चड्ढा जी ने कहा कि असक्षम से सक्षम बनाकर अन्यों को शिक्षित व स्वाबलम्बी बनाने को प्रोत्साहित करें। जरुरतमंद कमजोर आय वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दें। इस अवसर पर दोनों पक्षों के परिजन उपस्थित थे।

नवदम्पति व उनके परिजनों ने कहा कि आर्यसमाज की व्यवस्था, व्यवहार एवं पूर्ण वैदिक विवाह पद्धति से हम प्रसन्न हैं।

नव दम्पति ने कहा कि आज आर्समाज के प्रवचनों से हमनें समाज सेवा की एक नई उर्जा पैदा हुई है।

– राकेश चड्ढा, मन्त्री

नव विवाहित दम्पति के साथ आर्यसमाज के अधिकारीगण

शोक समाचार

डॉ. एच.आर. आनन्द का निधन

रामगली आर्यसमाज सी-13, हरी नगर घंटा घर नई दिल्ली के संरक्षक डॉ. एच. आर. आनन्द जी का गत 11 अगस्त , 2013 को निधन हो गया।

श्रीमती शुकला का निधन

रामगली आर्यसमाज सी-13, हरी नगर घंटा घर नई दिल्ली के संरक्षक श्री के. के. कुमरा जी की धर्मपत्नी श्रीमती शुकला कुमरा का दिनांक 15 अगस्त, 2013 को निधन हो गया।

श्री टेक चन्द का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सुखवीर सिंह आर्य जी के साले श्री टेक चन्द जी का दिनांक 15 अगस्त को 48 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। वे अपने पीछे एक पुत्र, 3 पुत्री एवं धर्मपत्नी सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में वीर सावरकर .....

कार्यकलापों को चकनाचूर करके ही दम लेगी।" वीर सावरकर ने 22 जनवरी सन् 1939 को समस्त देश में निजाम निषेध दिवस मनाने की भी प्रेरणा दी। यह लेखनी भाव व्यक्त करते हुए गर्वित हो रही है कि आर्यसमाज के इस सत्याग्रह आन्दोलन में हिन्दू महासभा ने पूर्ण सहयोग दिया। वीर सावरकर की प्रेरणा पर सनातन धर्मी विचारधारा के भी अनेक व्यक्ति हैदराबाद आन्दोलन में जेल गए और भीषण यातनाएं सहन कीं। वीर सावरकर ने पूणे जाकर हिन्दू महासभा का विशाल जत्था हैदराबाद भिजवाया।

खेद है कि गांधीजी एवं अन्य कांग्रेसी नेताओं ने कुसंस्कारों के अनुसार, मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के अनुसार ही आर्य समाज के इस असाम्प्रदायिक आर्य सत्याग्रह को साम्प्रदायिक आर्य सत्याग्रह बताया। इतना ही नहीं, गांधी जी ने अपने 'हरिजन' पत्र में इसकी कटु आलोचना की। पूर्व मध्य प्रदेश तथा बरार विधान सभा के अध्यक्ष श्री धनश्याम सिंह जी गुप्त ने गांधी जी को निजाम के अत्याचार तथा नागरिक अधिकारों का विशेषकर धार्मिक अधिकारों का हनन करने का सम्पूर्ण विवरण बताया, तब कहीं गांधी जी ने अपने अधखुले मुंह से इस सत्याग्रह की सफलता के लिए कुछ शब्द कहें। गांधी जी के असहयोग रवैये की देशभर में कटु आलोचना हुई। तब सामाजिक अपयश से बचने के लिए उन्होंने कहा– ***"धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए चलाए गए आन्दोलन से तो मुझे सहानुभूति है, किन्तु हिन्दू महासभा द्वारा आन्दोलन में कूद पड़ने से यह साम्प्रदायिक हो गया है।"*** ऐसी कड़वी बात हिन्दू महासभा के तत्कालीन कर्णधार कैसे सहन कर सकते थे? उन्होंने तत्काल नहला पर दहला मारा। वीर सावरकर तथा डॉ. मुंजे ने गांधी जी के वक्तव्य का उत्तर देते हुए कहा – ***"गांधीजी बताएं, कि वन्देमातरम् को सहन न करने वालों, हिन्दी भाषा का विरोध करने वालों एवं स्वाधीनता संग्राम में सहयोग न देने की धमकी देने वालों की चापलूसी करना, उन्हें सिर पर चढ़ाना क्या बड़ा भारी धर्म निष्पक्षता व न्याय है? क्या वह साम्प्रदायिकता का पोषण करना नहीं है?"*** उल्लेखनीय है कि गांधी जी के इस निराशा भरे वक्तव्य से आर्य सत्याग्रह को और भी बल मिला और उसमें तेजी आ गई। वीर सावरकर जी ने देश के अनेक स्थानों पर जाकर इस सत्याग्रह के प्रचार में जोशीले भाषण दिए और सत्याग्रहियों को हैदराबाद भेजा। इसका सुपरिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज के इस शानदार सत्याग्रह की ओर पूरे देश का ध्यान गया और गांधी जी को अपनी जिह्वा रोकनी पड़ी।

इधर नागपुर में वीर सावरकर की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ तो उन्होंने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सम्बन्ध में भाषण देते हुए कहा– ***"हैदराबाद निजाम के अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध समस्त देश की हिन्दू जनता को एक सूत्र में संगठित होकर इस धर्मयुद्ध में कूद पड़ना चाहिए। यदि निजाम की धर्मान्धता का विषैला फन न कुचला गया तो भोपाल व अन्य मुस्लिम स्थानों पर भी हिन्दुओं पर अत्याचार किए जाएंगे।"***

इसके बाद खुलना में हिन्दू परिषद् की बैठक हुई तो वीर सावरकर का भी भाषण हुआ। उनके औजस्वी भाषण को सुनकर खुलना में ही पहली बार डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी बहुत प्रभावित हुए और वे हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो गए। खुलना में से भी सावरकर जी की प्रेरणा पर हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में एक विशाल जत्था गया। हैदराबाद के इस सत्याग्रह में हिन्दू वीर शहीद हुए। उनका बलिदान रंग लाया और निजाम सरकार को आर्यसमाज के साथ समझौता करना पड़ा।

पं. नरेन्द्र जी (हैदराबाद) के अनुसार हैदराबाद सत्याग्रह में आर्यजनता का तत्कालीन 10 लाख रुपया व्यय हुआ। इस पूरी राशि को श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त हैदराबाद शासन से वसूल करना चाहते थे। वे सब अकबर हैदरी, मुख्यमन्त्री से मिले पर उनको सफलता प्राप्त न हो सकी। यहां श्री घनश्याम सिंह गुप्त ने एक नीति के अनुसार गांधी जी से सम्पर्क किया। वे 24, 25, 26 जून 1939 तक गांधीजी को समझाते रहे। अन्त में जिन गांधी जी ने इस आर्य सत्याग्रह के सम्बन्ध में अपनी भिन्न राय प्रकट की थी, उन्हीं गांधी जी ने एक पत्र अकबर हैदरी को लिखकर कहा– ***"10–15 लाख रुपये दने से हैदराबाद के निजाम कुछ गरीब नहीं हो जाएंगे (जबकि आर्यसमाज के पास इतनी बड़ी रकम खर्च करने की शक्ति नहीं है।"*** महात्मा गांधी ने यह बात पर्याप्त कड़े शब्दों में कही थी। परिणामतः हैदराबाद शासन को झुकना पड़ा और उसने लगभग 15 लाख रुपया आर्यसमाज को दिया। इस राशि से न केवल आर्य सत्याग्रहियों के आने–जाने का खर्च ही पूरा हुआ अपितु उनके व्यवसाय में जो हानि हुई थी, उसका भी हर्जाना मिला। इसे कहते हैं – ***"सत्यमेव जयते।"***

इसी प्रकार सन्1944 में सिंध सरकार ने जब ऋषि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश के 14वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाया था, उस समय भी सन् 1944 में बिलासपुर में हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशन में देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी तथा वीर सावरकर ने तीव्र आलोचना करते हुए कहा था – "जब तक सिंध में 'सत्यार्थ प्रकाश' पर पाबन्दी लगी है तक तक कांग्रेस शासित प्रदशों में कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग प्रबल की जानी चाहिए।"

– ***'सुकिरण' – अ/13, सुदामा नगर, इन्दौर– 452009 (म. प्र.)***

पृष्ठ 4 का शेष

योगीराज श्री कृष्ण .....

संकल्प और व्रत आदि हैं वे तेजी से छूट रहे हैं। इसमें धार्मिक नैतिक और जीवन मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। जड़ पूजा तेजी से बढ़ रही है। धर्म घट रहा है। आडम्बर, ढोंग पाखण्ड और अन्धविश्वास फैल रहा है।

आज आवश्यकता है श्री कृष्ण के वास्तविक स्वरूप और चरित्रा को समझने की, उनके योगदान महत्व तथा चारित्रिक विशेषताओं को जन–जन तक पहुँचाने की, जो उनके चरित्रा के साथ भ्रान्तियाँ व विकृतियाँ जुड़ गई हैं, उनका तर्क प्रमाण युक्ति से निराकरण कर जनता तक यथार्थ स्वरूप को पहुँचाने की। यह दायित्व आर्य समाज का है। क्योंकि आर्य समाज का जन्म ही भ्रान्तियों विकृतियों और अन्धविश्वास को मिटाने के लिए हुआ है। खेद है कि आज आर्य समाज भी अपने उद्देश्य और कर्तव्य को भूलता जा रहा है। जो मुख्य कार्य वेद प्रचार और जनता को जीवन व जगत् का सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाना था, वह छूटता जा रहा है। व्यर्थ विवादों व उलझनों में समय शक्ति व धन नष्ट किया जा रहा हैं। आर्य समाज को अपने महापुरूषों के स्वच्छ–पवित्रा जीवन चरित्रों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए आगे आना चाहिए। यह उसका दायित्व है।

उत्सव, पर्व, जन्मतिथियां जीव और जगत् को सत्य न्याय धर्म आदि के मार्ग पर प्रेरित करेने लिए आती हैं। योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमें सन्देश और प्रेरणा दे रहा है कि जो आज संसार में असत्य, अधर्म, अन्याय, पाप, संघर्ष आदि बढ़ रहा है, हमें धर्म पूर्वक आचरण करते हुए सत्य और न्याय की रक्षा करनी चहिए, तभी श्रीकृष्ण की जन्मतिथि मनाने की सार्थकता उपयोगिता व व्यवहारिकता है। तभी हम व्यास के इस कथन में स्वर मिलाकर कह सकेंगे– कृष्णं वन्दे जगद् गुरूम्।

– बी० जे० – 29, शालीमार बाग, दिल्ली– 110088

दिल्ली की आर्यसमाजें सावधान!

आर्यसमाज पंजाबी बाग (प०) के साथ साजिश

चार व्यक्तियों के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज

थाना पंजाबी बाग में आर्यसमाज पंजाबी बाग (रजि.) के द्वारा चोरी एवं षड़यन्त्र का मुकदमा आई. पी.सी. की ध ाारा 380/120 बी के तहत चार लोगों के खिलाफ एफ.आई.आर. नं. 283/13 दर्ज कराई गई है। इनके नाम सुरेन्द्र मोहन सूद, डॉ. विनय सूद (शिवाजी पार्क), सुरेन्द्र पाल मानकटाला (पंजाबी बाग) एवं विनोद मगोत्रा (स्टेट बैंक नगर पंजाबी बाग) हैं। ये चार लोग आर्यससमाज पंजाबी बाग पश्चिम के खिलाफ षड़यन्त्र रच रहे थे। इस षड़यन्त्र का पूरा पर्दाफाश करने के लिए पुलिस द्वारा तफतीश जारी है।

उल्लेखनीय बात यह है कि 20 जनवरी, 2013 को आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम की नई कार्यकारिणी के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें ये चारों व्यक्ति चुनाव हार गए थे। तभी से चारों व्यक्ति संस्था के कार्यों में लगातार हस्तक्षेप करते हैं तथ आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम व उसकी संस्था एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल के दैनिक कार्यों में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। साथ ही अनर्गल प्रचार के द्वारा लगभग 50 वर्ष पुरानी इस आर्यसमाज व एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल की छवि को क्षति पहुंचा रहे हैं।

संस्था के वकील श्री अजय बर्मन ने बताया कि कार्यकारिणी को यह जानकारी तब मिली जब 2 अप्रैल, 2013 को आर्यसमाज का कर्मचारी पंजाब नेशनल बैंक की पंजाबी बाग शाखा में संस्था के खाते की पास बुक एन्ट्री करवाने के लिए गया। जिसमें 31 चैक अनजान लोगों ने साजिश के तहत जमा करा दिए। आर्यसमाज की कार्यकारिणी की जानकारी व अनुमति के बिना, बिना विधिवत प्रक्रिया अपनाए बिना फार्म भरे और बिना रसीद लिए इन 31 लोगों के चैक थे, जिसमे पीछे लिखा था मेम्बरशिप हेतु। इससे इन चार लोगों का, जिनका नाम एफ.आई. आर. में दर्ज है,गलत इरादा स्पष्ट हो जाता है कि वे उपरोक्त लोगों को आर्यसमाज का अवैधानिक रूप से सदस्य घोषित करना चाहते थे।

आर्यसमाज के अधिकारी इस बात के लिए कटिबद्ध हैं कि इन चार व्यक्तियों द्वारा अपनाए जा रहे हथकण्डों से आर्यसमाज की किसी भी प्रकार की हानि नहीं होने देंगे तथा आर्यसमाज द्वारा संचालित एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल में अध्ययनरत 2000 छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य व उन्नति के लिए वचनबद्ध हैं।

मामला प्रकाश में आने के बाद सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने समस्त आर्यसमाजों को सतर्क एवं सावधान रहने की अपील की।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 अगस्त, 2013 से रविवार 25 अगस्त, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 अगस्त, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 अगस्त, 2013

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

(विश्व वेद सम्मेलन)

28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

प्रतिष्ठा में,

सम्मानीय आर्य बन्धुओं! सादर नमस्ते!

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** एवं **आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 को द. अफ्रीका की राजधानी डरबन में** सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि डरबन पहुंच रहे हैं। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुंचेंगे।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही द. अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगी।** अनेकों आर्यजन डरबन सम्मेलन के इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इस कारण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डरबन के अतिरिक्त द. अफ्रीका के अन्य स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा का भी कार्यक्रम बनाया गया है।

विस्तृत जानकारी/यात्रा विवरण/आवेदन पत्र हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/– रुपये

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्ति स्थान :–

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर